ईश्वर
का ब्रश
लेओनोर

ईश्वर का ब्रश

लेखक का नोट

वू-दाओजी (689-759) शायद चीन के सबसे बड़े चित्रकार के रूप में जाने जाते हैं और उन्हें तांग राजवंश के दौरान चित्रकला का ऋषि कहा जाता था. उन्होंने पेंटिंग्स में गतिशीलता चित्रित करने की अवधारणा पेश की. उनके बनाए चित्रों में लोगों के स्कार्फ उड़ते थे, वस्त्र झूलते थे, और बाल हवा में उड़ते थे. उस समय कैलीग्राफी को कला का उच्चतम रूप माना जाता था, लेकिन वू-दाओजी ने लगभग अकेले ही पेंटिंग देखने का तरीका बदला. उनके समकालीनों ने कविताओं और निबंधों में उनकी बहुत प्रशंसा की, लेकिन उनके बारे में बहुत कम लिखा गया.

वू-दाओज़ी ने चंगान के आसपास के मठों, महलों और मंदिरों की दीवारों पर भित्ति-चित्र बनाए, जो तांग राजवंश की पश्चिमी राजधानी है, और वर्तमान में जियान है. उन्होंने लगभग तीन सौ भित्ति-चित्र बनाए और सौ से अधिक स्क्रॉल तैयार किये. पर अब उनका कोई भी भित्ति-चित्र सुरक्षित नहीं बचा है.

वू-दाओज़ी के जीवन और कार्य की यह कल्पित जीवनी मैंने कविताओं और निबंधों के अनुवाद और तांग काल के दौरान चंगान में जीवन के बारे में कई ज्ञात तथ्यों के आधार पर लिखी है.

वू-दाओज़ी ने अपने हाथ में ब्रश देखा और मुलायम
बालों को महसूस किया. उन्हें उससे गुदगुदी हुई.

"अपने ब्रश को भिगोओ," उनके कठोर बूढ़े भिक्षु शिक्षक ने आदेश दिया.
दाओज़ी ने ब्रश को पानी की एक छोटी तश्तरी में भिगोया. उन्होंने अपनी सांस रोककर रखी.

"अपनी स्याही पीसो," भिक्षु ने आदेश दिया.
जब शिक्षक ने उन्हें दिखाया तो दाओज़ी का ध्यान कहीं और था.
अब उन्होंने दूसरे बच्चों को देखा और जितना संभव हो सका उनकी नकल की.
उन्होंने एक सपाट पत्थर पर पानी की कुछ बूँदें डालीं और फिर स्याही की टिकिया को एक तरह से रगड़ा. उन्हें पत्थरों के बीच काले आँसू दिखाई दिए.

"सीधे बैठो," भिक्षु ने आग्रह किया.
दाओज़ी उठ बैठे.
"अपने ब्रश को अपनी नाक के सामने पकड़ो,"
भिक्षु ने कहा.
दाओजी ने अपनी गर्दन को आगे बढ़ाया ताकि
उसका सिर उसके ब्रश के ऊपर चंद्रमा की तरह
तैरता रहे. फिर उन्होंने अपनी नाक सीधी करके
देखा.

"धीरे से दबाओ." उनके शिक्षक ने कहा. उन्होंने क्लास को दिखाया कि
कैसे एक बाएं से दाएं की स्ट्रोक से वो चीनी में
"एक" संख्या को पुराने कछुए के खोल पर बना सकते थे.
"कैलीग्राफी कला में सबसे सर्वोच्च है," उन्होंने जारी
रखा, धीरे-धीरे सुंदर स्ट्रोक में अन्य संख्याएं लिखना.
"वो तुम्हारे चरित्र को प्रकट करेंगी.
अगर तुम इसे अच्छी तरह करोगे
तो तुम अपने परिवार के लिए
बहुत सम्मान लाओगे."

दाओज़ी के ब्रश की नोक से कुछ कीड़े रेंगते हुए निकले.
वो हांफने लगा.
"वह क्या है?" भिक्षु टीचर ने पूछा.
"कीड़े," दाओजी ने कहा. "कीड़े?"

शांति.
"तुम्हारे कीड़े बहुत सुंदर हैं, लेकिन तुम्हें अपनी स्ट्रोक्स का अभ्यास करना चाहिए.“ इसलिए दाओजी ने फिर से कोशिश की.
इस बार उसके ब्रश में से घास का एक तिनका बाहर आया.
दूसरे बच्चे उसे हँसते-चिढ़ाते रहे.
"तुम्हें और कठिन प्रयास करना चाहिए," भिक्षु ने कहा.
एकाग्रता ने दाओज़ी के शरीर को एक तंग छोटे पंखे में बदल दिया.

फिर, उसकी कलाई में एक झटके के साथ, एक सीधी रेखा उसके ब्रश से बाहर निकली . . फिर वो मुड़ी और नीचे गिर गई.
"मुझे कैलीग्राफी बहुत पसंद है!" उसने कहा.
"यह कैलीग्राफी नहीं है," भिक्षु ने आह भरते हुए कहा.

प्रत्येक दिन दाओज़ी के ब्रश से कुछ नया और आश्चर्यचकित करने वाला बाहर निकलता था.

उसकी सीधी रेखाएँ पेड़ों की टहनियों में बंट जाती थीं. उसके बनाए हुक मछली पकड़ते थे.
उसकी बनाई बिंदियां आँखें बन जाती थीं, और कभी सूअर और बंदर भी. उसकी स्ट्रोक से बनी घोड़े की पूंछ उड़ान भरती थी.

लड़का हर जगह दीवारों पर चित्र बनाता था - मंदिरों, चाय की दुकानों पर और रेशम के बाजार में. यहां तक कि उसने अपने शहर की बड़ी दीवार पर भी धावा बोला. नाचते फूल. फ्लाइंग बुद्ध जो आकाश में उड़ रहे थे.
उनके चारों ओर बादल छाए थे.

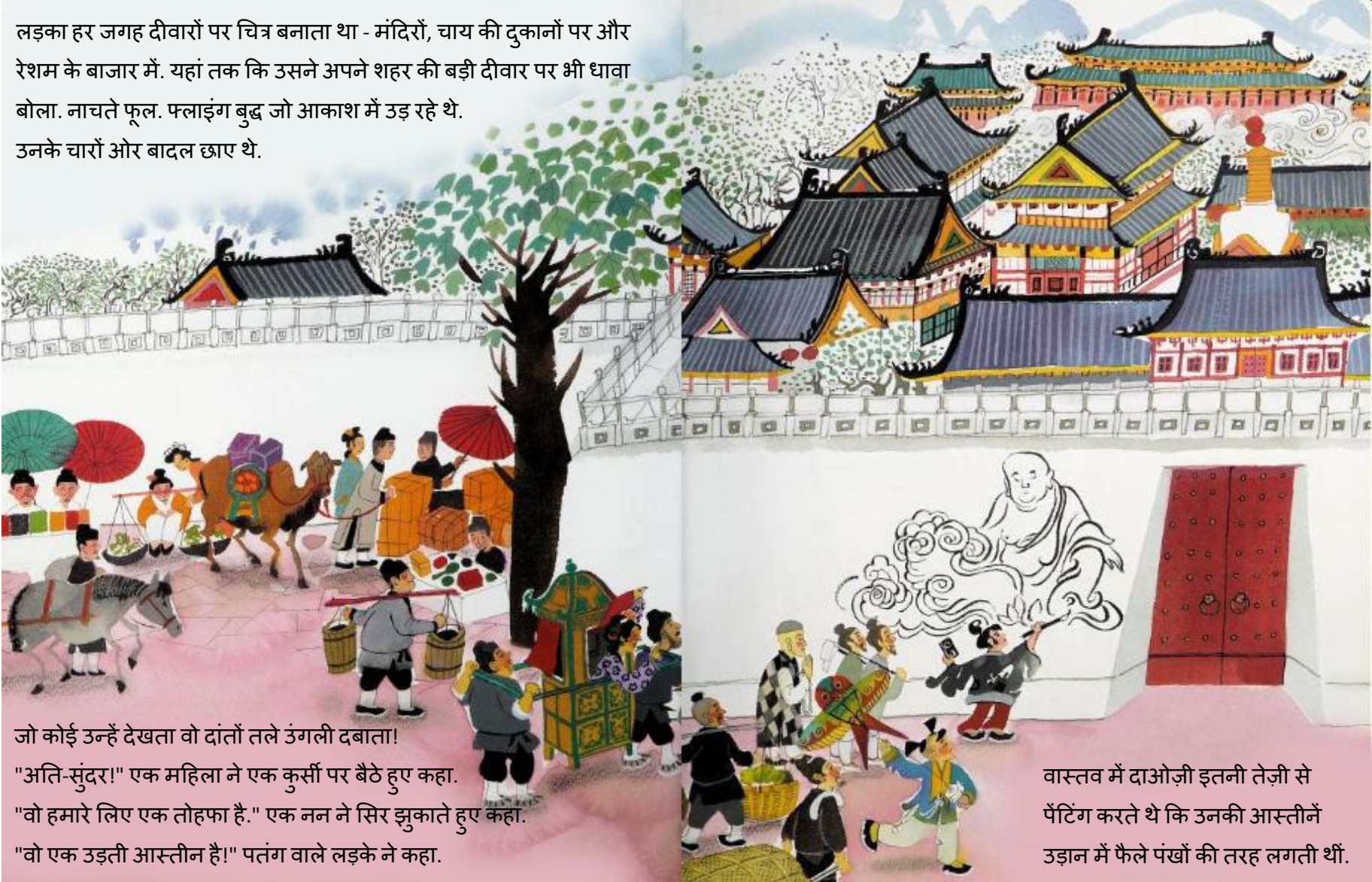

जो कोई उन्हें देखता वो दांतों तले उंगली दबाता!
"अति-सुंदर!" एक महिला ने एक कुर्सी पर बैठे हुए कहा.
"वो हमारे लिए एक तोहफा है." एक नन ने सिर झुकाते हुए कहा.
"वो एक उड़ती आस्तीन है!" पतंग वाले लड़के ने कहा.

वास्तव में दाओज़ी इतनी तेज़ी से पेंटिंग करते थे कि उनकी आस्तीनें उड़ान में फैले पंखों की तरह लगती थीं.

फिर प्रशंसकों ने उस चित्रकार के
सामने सिक्के डालने शुरू किये.
लोग उन्हें अब "फ्लाइंग स्लीव्स"
(उड़ती आस्तीन) बुलाते थे.
लोग उन्हें दान में चावल, फल.
यहां तक कभी-कभी एक
मुर्गी भी भेंट कर जाते थे.

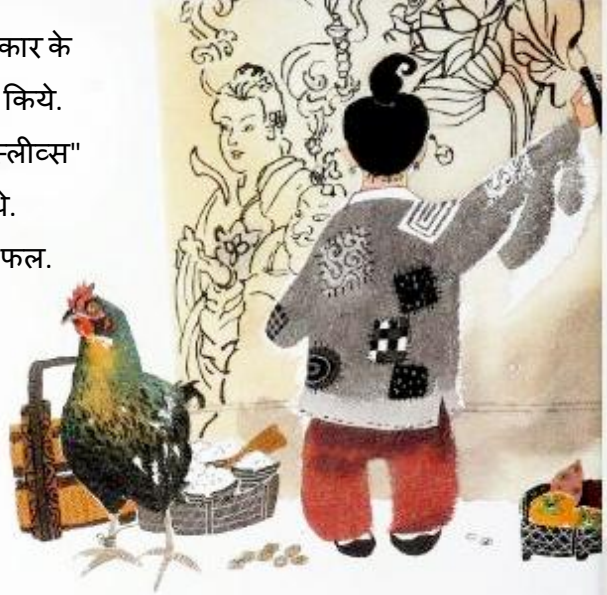

फिर दाओज़ी तुरंत उस सब
सामन को लेकर मठ में भागते
और गरीबों को खाना खिलाते.
उससे भिक्षु बहुत प्रसन्न होते.

हर दिन दाओज़ी अपने दिल की बातें चित्रित करते थे. अक्सर उनकी एक आंख खुली होती और दूसरी आँख कोई सपना देख रही होती. वो दिन भर चित्र बनाते रहते. सुबह या शाम का उन्हें कोई भान नहीं रहता. वो बैठे हैं या खड़े हैं इसका भी उन्हें कोई ध्यान नहीं रहता था.

धीरे-धीरे मौसम बीते.
दाओज़ी ने जितने ज़्यादा चित्र बनाए उन्हें उतना ही अच्छा लगा. फिर एक दिन उन्होंने एक इतनी उत्कृष्ट और नाजुक तितली का चित्र बनाया कि वो उसे घूरते ही रह गए, उससे अपनी नज़र नहीं हटा सके.
जितनी देर उन्होंने उसे घूरा वो तितली उतनी ही वास्तविक दिखाई दी.
फिर जब हवा चली तो तितली का एक पंख हिला, बस थोड़ा सा....
"अरे! वाह?" दाओज़ी ने कहा. वो उसके और करीब झुके.
फिर अचानक, तितली उड़ गई और किसी जले हुए कागज की तरह हवा में तैरने लगी.
"अरे! चित्रकार चिल्लाया, "शायद मैंने केवल उसका चित्र बनाने की सिर्फ कल्पना की होगी, पर वास्तव में वहां एक असली तितली उतरी होगी."

जल्दी से दाओज़ी ने एक और तितली पेंट की.
इस बार वो उस तितली का नाम जानते थे -
एम्परर लेपर्ड लेसविंग.
तितली के पंख दोपहर की रोशनी में जगमगा उठे.

लड़के ने पलक झपकाई.
तितली ने आँख मारी.

इससे पहले कि दाओज़ी अपनी खूबसूरत रचना पर अपना हाथ रख सकें, वो उड़कर बहुत दूर चली गई.
"वापस लौटकर आओ!" वो चिल्लाए. "तुम मेरी एक पेंटिंग हो!" लेकिन तितलियां भला किसकी बात सुनती हैं?

फिर जल्दी से दाओज़ी ने एक ऊंट का चित्र बनाया और वो इस खबर को भिक्षुओं को बताने के लिए दौड़े.
लेकिन जब तक वो वापिस लौटे तब तक ऊँट भी जा चुका था.

"मेरे चित्रित ऊंट इतने वास्तविक हैं कि वे चल सकते हैं!"
उसने अपने काम की बढ़ाई की.
भिक्षुओं ने अपना सिर हिलाया. "घमंड करने की तुलना में पेंट करना बेहतर है,"
उनमें से एक ने कहा.

दाओज़ी के बनाए पंछी उड़ते थे. उनके घोड़े पहाड़ों पर सरपट दौड़ते थे. यहां तक कि उनकी गाड़ियां सड़क पर दौड़ती थीं और सीधे शहर से बाहर चली जाती थीं. वो जो कुछ पेंट करते थे वो सब गायब हो जाता था.

उस दिन दाओज़ी को भेंट में कोई भी चावल या पैसे नहीं मिले. महान शहर की दीवार नंगी थी. पर अब लोग दाओज़ी के ब्रश को ईंटों पर चलते हुए सुन सकते थे.

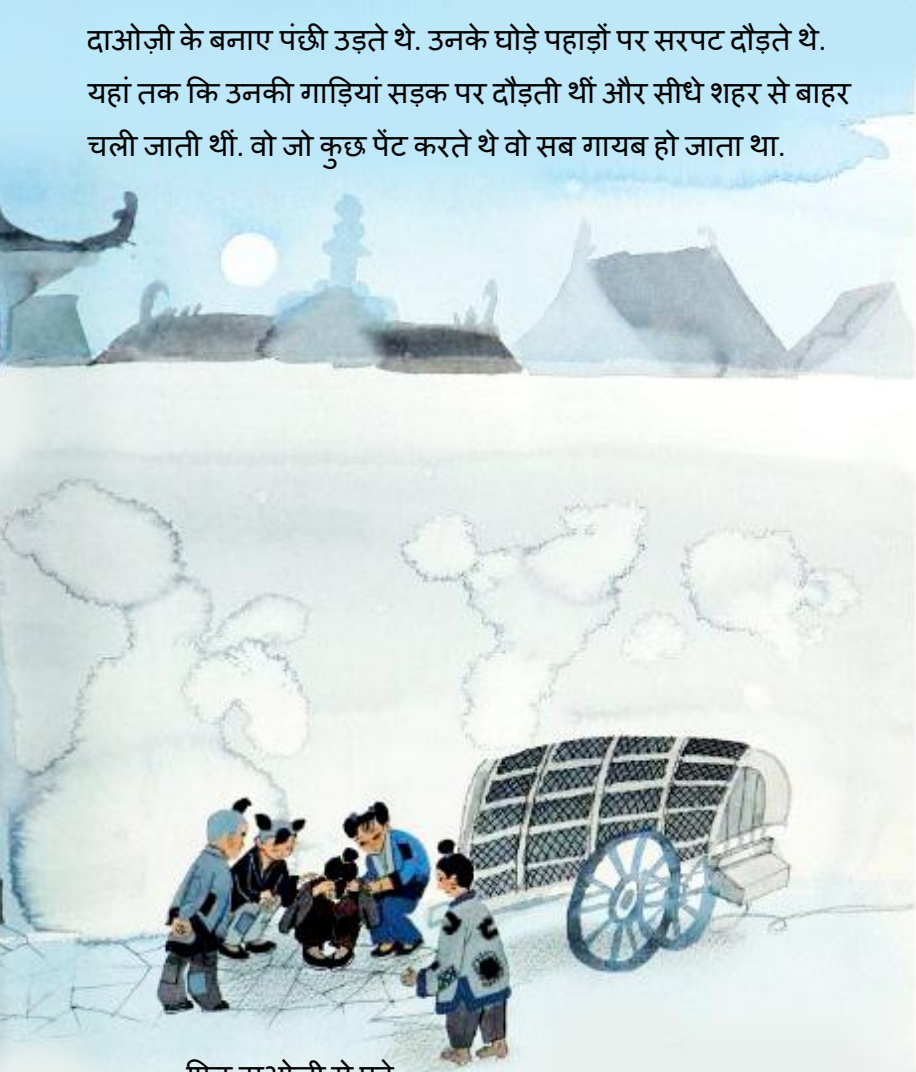

फिर दाओज़ी रो पड़े.
उनके सभी प्रशंसक भी गायब हो गए - बच्चों को छोड़कर.

"उसका कबूतर मेरे सिर पर आकर गिरा!"
एक भिखारी बच्चा रोया.

"मैं अपने टिड्डों के साथ चहक सकता हूं,"
किसी और ने कहा "चिरप! चिरप!"

बच्चों ने हर जगह दाओज़ी का पीछा किया. गरीब और फटेहाल उन भिखारी बच्चों ने दाओज़ी को चारों ओर से घेरे रखा जिससे कोई उन्हें कोई नुक्सान न पहुंचाए. जब वो पेंट करते थे, तो वे अपनी भूख-प्यास बिल्कुल भूल जाते थे.

फिर वर्ष बीतते गए. प्रशंसकों की भीड़ बढ़ती गई. पुराने बच्चे अब अपने बच्चों को, दाओज़ी के काम का चमत्कार दिखाने लाने लगे.

अक्षय पुण्य मंदिर के केंद्रीय गुम्बद में जब दाओज़ी ने भगवान बुद्ध का प्रभामंडल चित्रित किया तो लोग उसे देखने के लिए भागते हुए आए. दाओज़ी का ब्रश एक धूमकेतु की चमक जैसे बह रहा था. उसे देखकर लोग ताज़्ज़ुब में रह गए.

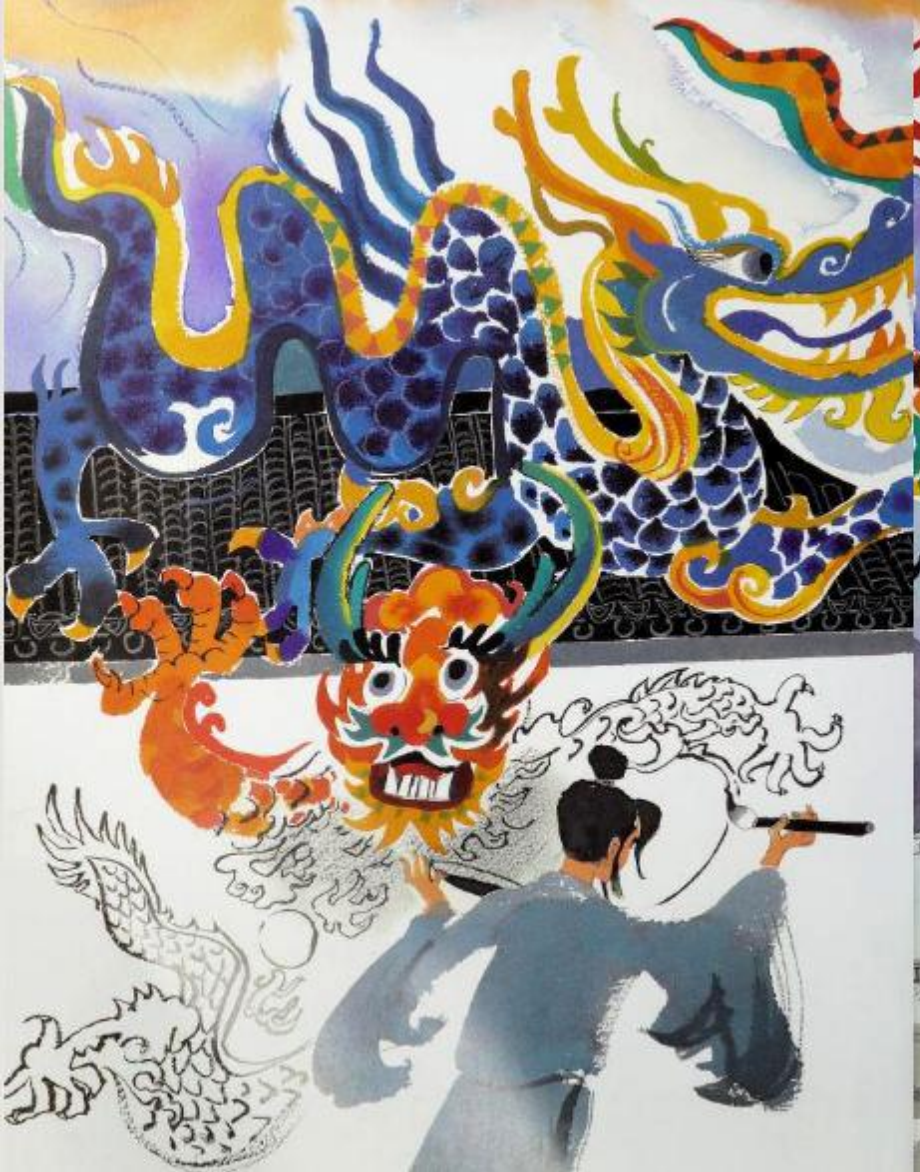

अंदर वाले हाल में दाओज़ी ने पांच ड्रेगन चित्रित किए, जिनके कवच उड़ते हुए दिखे. शहर भर के मंदिरों में, उनकी कल्पना की पहाड़ियों में से झरने बहते थे. "आह!" किसी ने कहा, "यह आदमी कोई साधारण चित्रकार नहीं है. उसके पास देवताओं का ब्रश है!"

एक दिन बादशाह खुद आया. सजीव ड्रैगन्स को देखकर, उसने अपनी तलवार खींच ली. वो फूलों को झुककर सूँघने लगा. उसने झरने के जल से पानी पिया. "मास्टर वू-दाओज़ी," सम्राट ने आखिर में कहा. "मैं आपको महल की एक पूरी दीवार दूँगा, जिस पर आप एक भव्य कृति चित्रित करें. कोई भी उसे तब तक नहीं देखेगा जब तक वो पूरी नहीं होगी." दाओज़ी के लिए यह सबसे बड़ा सम्मान था.

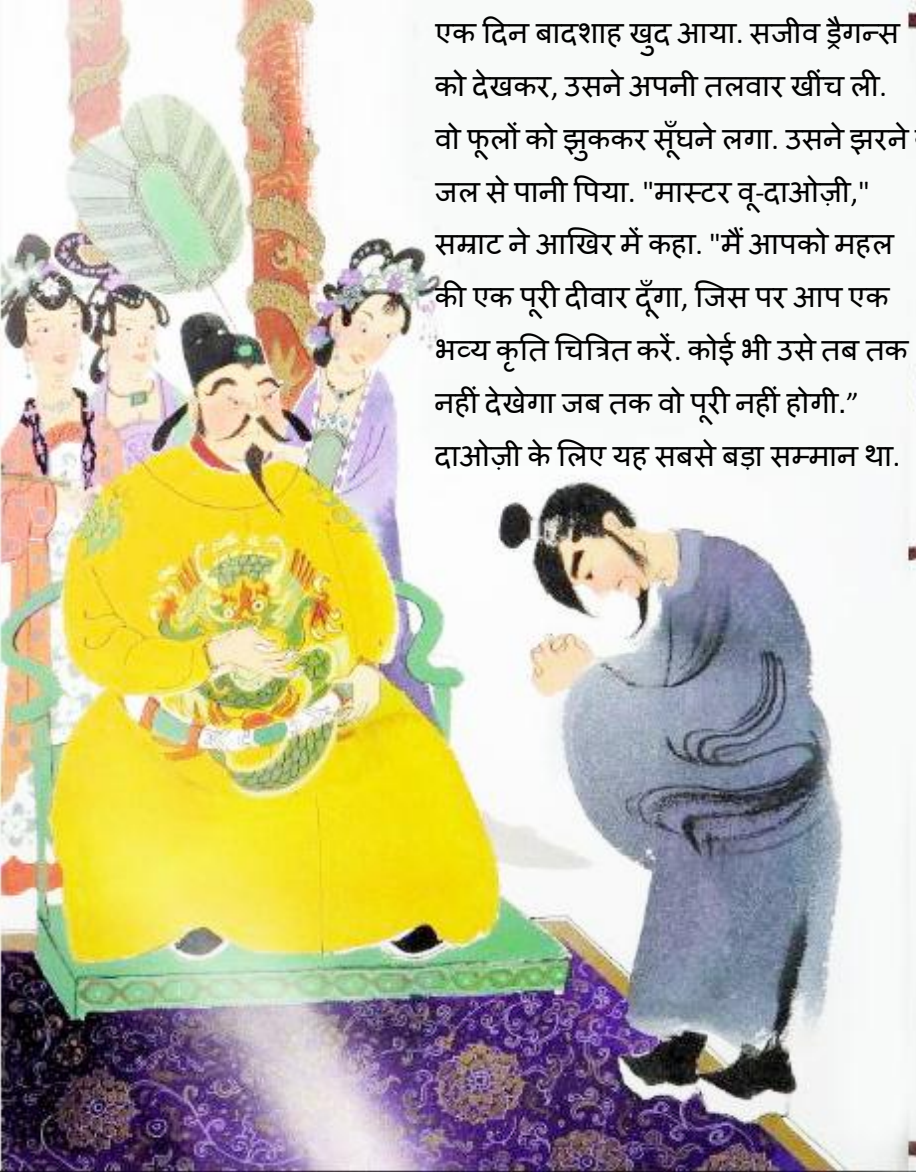

उन्होंने बादशाह को झुककर सलाम किया. लेकिन उस महान कृति को बनाने में कई साल लग गए.

जब तक भित्ति चित्र समाप्त हुआ, तब तक महान कलाकार बूढ़े हो चुके थे.

अंत में शाही अनावरण समारोह शुरू हुआ.
सात सौ वाद्ययंत्रों के एक आर्केस्ट्रा ने
संगीत बजाया.

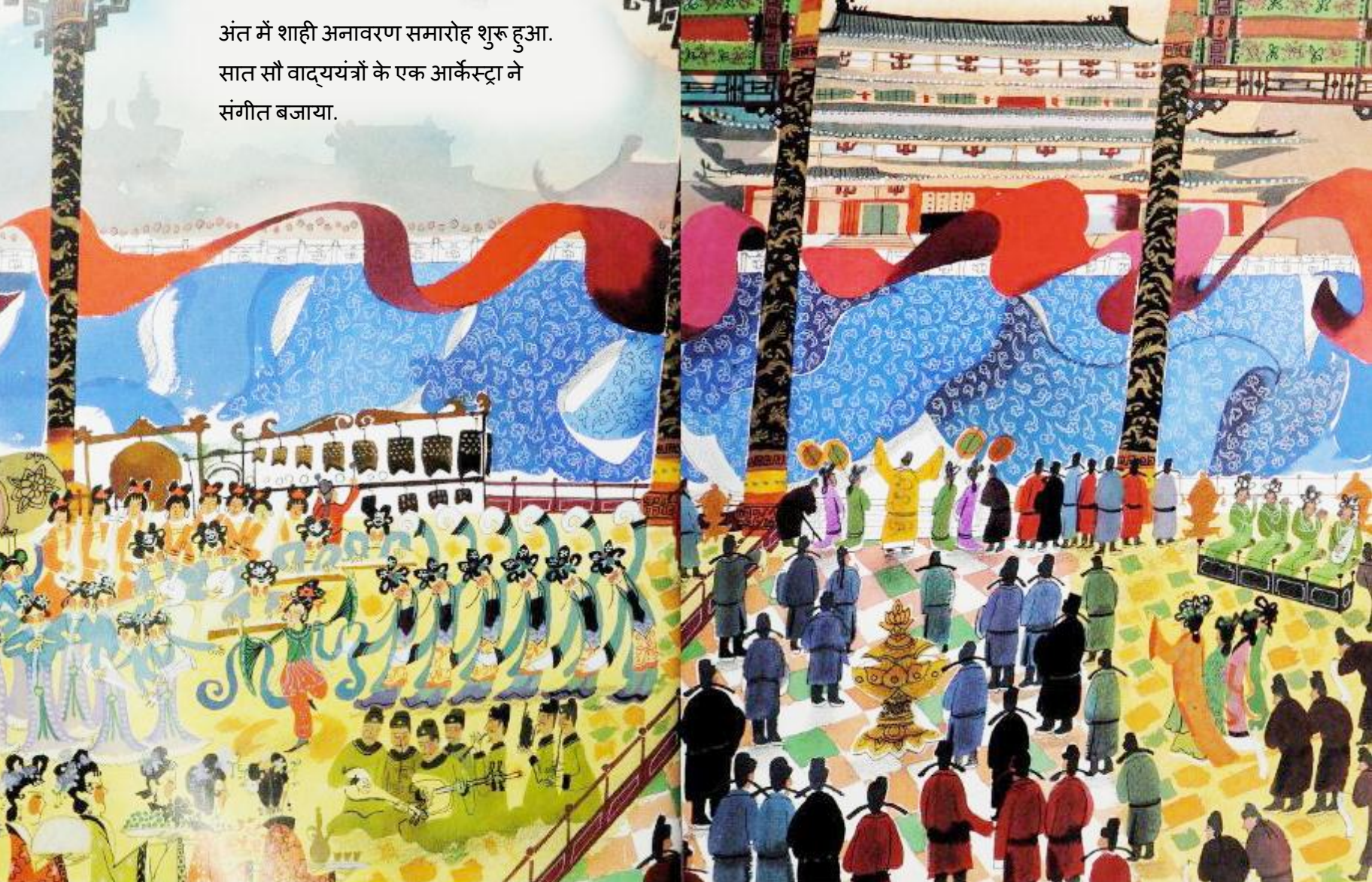

जब चिलमन को खींचा गया, तो पहाड़ों ने आकाश में छेद किया. बाँस हिलने लगे. पक्षियों ने उड़ान भरी. घोड़े सरपट दौड़ पड़े. नौ हजार, नौ सौ निन्यानबे चीजें निहारने के लिए थीं. पेंटिंग ताजा-गिरी बर्फ की तरह शानदार थी. भीड़ शांत हो गई. सम्राट ने झुककर अभिवादन किया.
चाँद रो पड़ा.

चंद्रमा के चांदी के आँसू में भीगते हुए, मास्टर चित्रकार ने एक झिलमिलाती मेहराब जोड़ी और वो तेज आवाज़ में चिल्लाया.

"यह स्वर्ग है!
मेरे पीछे आओ!"

और इससे पहले कि कोई आगे बढ़ता, देवताओं के ब्रश वाला आदमी
अपनी बनाई पेंटिंग में खुद सीधे चला गया. . और गायब हो गया.

किंवदंती है कि वू-दाओज़ी कभी नहीं मरे - वह केवल अपनी
अंतिम पेंटिंग में विलीन हो गए, एक भित्ती चित्र में जो
सम्राट ज़ुआनज़ोंग द्वारा कमीशन किया गया था.
वू-दाओज़ी के लापता होने वाले साल के बारे में भी लोगों के
अलग-अलग अनुमान हैं. लोगों का यह भी कहना हैं कि
वू-दाओज़ी ने मौत को धोखा दिया.